श्रीश्रीश्रीश्री ओली चालिसा

रचयिता

डॉ. गोपाल ठाकुर

प्रकाशक

जनसांस्कृतिक महासंघ

केन्द्रीय समिति

काठमाड़ो

यथार्थ के चित्रण ओली चालिसा

जनगायक, जनसाहित्यकार भाषाविद् कॉ. डॉ. गोपाल ठाकुर उचित समय पर प्रतिगमन आ प्रतिगमनकारी के यथार्थ चित्रण के रूप में ई लघु-काव्य के रचना कइले बानी । शुरू में दूगो आ अंत में तीनगो दोहा के बीच में चालिसगो चौपाई के मात्रिक छंद में रचित ई 'ओली चालिसा' में प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली के राजहठ के सटिक वर्णन समीटल बा ।

सामूहिकता के बदले चरम व्यक्तिवाद के परिणाम स्वरूप करीब-करीब दू-तिहाई बहुमत के सरकार प्रमुख रहला के बादो संविधान से बाहर जाके संसद के विघटन कइल, एह से पहिले भ्रष्टाचार में लिप्त रहल लोग के पोसल, कोरोना के कहर में जनता के निरिह छोड़ल, सत्ताप्राप्ति आ सत्ता में टिकल रहे खातिर नकली राष्ट्रवाद के एक नंबर के नाटकबाज जौन ओली चरित्र देखल गइल, कम्युनिष्ट त का, सामान्य दलीय मर्यादा आ देशभक्ति से दूर मात्रे ना कि ओकरा में रहल कम्युनिष्ट के खोल के भीतर रहल घोर सामंतवादी सोच अभीन के असंवैधानिक सर्वसत्तावादी चरित्र दर्शावेला ।

अइसन अनेको उल्झन के जनता के सोझा बड़ा सुन्दर काव्यात्मक शैली में ई पुस्तिका परोसले बा । नया परिस्थिति आ घटना पर तत्काले गीत, कविता, लेख-रचना मार्फत जनता में पहुँचे के कॉ. ठाकुर में जे हुनर बा ऊ नीक ढङ से इहाँ प्रदर्शित भइल बा । ई पुस्तिका निश्चित रूप में न्यायप्रेमी श्रमजीवी जनसमुदाय में मनोरंजनात्मक ढङ से राजनीतिक यथार्थ के बुझे-बुझावे में सार्थक होई, हमरा विश्वास बा ।

माघ १, २०७७

मातृका प्रसाद यादव
स्यायी कमिटी सदस्य, नेकपा

श्रीश्रीश्रीश्री ओली चालिसा प्रारंभ

दोहाः—

ओली चरण सरोज रज,
प्रभु के तिलक उजियार ।
बादल माझी लेख करिहें,
समृद्ध आपन कपार ।।
श्रीहीन तनु जानिके,
सुमिरीं ओली करतार ।
आमजन जाए भाँड़ में,
खुद के करीं बरियार ।।

चौपाईः—

जय ओली जग तारणहारा ।
नव सामंत जगत उजियारा ।।१।।

पृथ्वी महेन्द्र महा प्रतापी ।
उनकर रउआ भल पदचापी ।।२।।

पृथ्वी अङुड़ी त्रिभुवन चाटी ।
महेंद्र तुरलें जन के टाटी ।।३।।

ज्ञानु दल के मेहरी कहलें ।
खोजी-खोजी जन के ढहलें ।।४।।

ते पर राउर महिमा भारी ।
गोर्खा महाराज अवतारी ।।५।।

पृथ्वी दिव्योपदेश कइलें ।
हमर मुखड़ा मन से हटइलें ।।६।।

महेंद्र के पंचायत आइल ।
गोबर-गणेश खुबे पुजाइल ।।७।।

बिगड़ल पर्यावरण देश के ।
तहस-नहस कइलस मधेश के ।।८।।

ओली राउर राष्ट्रवाद के ।
ठाँव नइखे वादविवाद के ।।९।।

नवसामंती साम्यवाद के ।
आ कि महाजाल जनवाद के ।।१०।।

एमसीसी बा लागल डिगड़ी ।
देश जलाशय हमनी मछरी ।।११।।

आई यांकी मलहा इहवाँ ।
हमनी जनता जाएब कहवाँ ।।१२।।

लमहर पोखर आस बताके ।
यांकी अघाइ हम के खाके ।।१३।।

अहो भाग कोरोना आइल ।
ओली महिमा जन में छाइल ।।१४।।

पोजिटिभ लउकल दुइए-चार ।
लॉकडाउन में देश हमार ।।१५।।

पैदल सइओ माइल रास्ता ।
कके पहुँचल फँसल जे दस्ता ।।१६।।

काठमाड़ो के अटल सुरक्षा ।
बाँकी के करस दइब रक्षा ।।१७।।

विदेशो फँसल जे नेपाली ।
भूखा पेट त जेबो खाली ।।१८।।

संक्रमित बढ़ल हजारो हजार ।
लॉकडाउन ना देश हमार ।।१९।।

जीटुजी में जब कुछ किनाइल ।
निजिओ से बहुते महङाइल ।।२०।।

राहतो के देखनी टिटिमा ।
खास गरीब के बनत कीमा ।।२१।।

राउर कहल बड़ उम्दा लोग ।
कइलस सत्ता चरम दुरुपयोग ।।२२।।

हटलस अपना मंत्री पद से ।
गिरल जन के नजर के हद से ।।२३।।

राउर महिमा कहीं केतना ।
सहसर जीभ न सके जेतना ।।२४।।

सुरासुर सनकादि नरनारी ।
करता राउर चौकीदारी ।।२५।।

सुख ना आन सेवा में भाइ ।
जो मिले ओली सेवकाई ।।२६।।

राजशाही प्रचंड हटाके ।
ओली सेवी भइलें आके ।।२७।।

जे ना करिहें राउर सेवा ।
से ना तरिहें देके खेवा ।।२८।।

मंत्री, हाकिम, पुलिस प्रशासन ।
जनता दुहते करता शासन ।।२९।।

सरकार ना खाद मङ्वाई ।
जनता पर लाठी बरसाई ।।३०।।

बाँकी तस्करी से फायदा ।
रहल ई सरकारी कायदा ।।३१।।

रउए स्रष्टा रउए द्रष्टा ।
रउए कर्ता रउए हर्ता ।।३२।।

साम्यवाद बा रउए तक ले ।
जब ले चाहेम तबे तक ले ।।३३।।

तिहतर दिन में फ्रांस से हटल ।
तिहतर बरीस में रुसो पटल ।।३४।।

रउआ अइनी पाँच बरस ला ।
सोचनी ना तिसरो बरस ला ।।३५।।

राउर सृष्टि राउरे बनके ।
जइसे चमड़ा होला तन के ।।३६।।

रहेम तब ले राउरे रही ।
मजाल बा केहु कुछिओ कही ।।३७।।

करीं उहे जे ओली कहिहें ।
ना त संकट केहु ना हरिहें ।।३८।।

पढ़ी जे ई ओली चालिसा ।
होई सिद्धि ग्रसी ना निशा ।।३९।।

जीवन जे ओली के चेरा ।
सुख-समृद्धि सदा करी डेरा ।।४०।।

दोहा:—

मोहन तनय संकट हरन,
देश बनल अन्तरकूप ।
सेवा से बाहर ना कोई लउकी,
तस्कर जेतना रूप ।।
राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय,
सेटिङ बड़ा अनूप ।
संसद भङ दल तोड़के,
भइनी महासुर भूप ।।
बाँकिर जन के ताप से,
भष्मीभूत सुरासुर ।
कब ले जन के सामने,
टिकेम ओली भष्मासुर ।।

श्रीश्रीश्रीश्री ओली चालिसा समाप्त

*****